हिन्दी - विभाग   डॉ० कविता कुमारी सिंह

पी॰ जी॰, द्वितीय सेमेस्टर –

विषय – ऐतिहासिक उपन्यास का शेष भाग –

आचार्य चतुरसेन शास्त्री 'सोमनाथ' के विषय में लिखा है 'कन्हैयालाल माणिक' लाल मुंशी के उपन्यास 'जय सोमनाथ' को पढ़कर उनके मन में आकांक्षा जगी कि वे मुंशी के नहले पर अपना दहला मारें और उन्होंने उपन्यास सोमनाथ की रचना की। लेकिन किसी विशिष्ट कथ्य या प्रतिपाद्य के अभाव में यह कृति साहित्यिक महत्व नहीं दिला पाई। 'वैशाली की नगरवधू' तथा अन्य के ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का लक्ष्य एक विशे[ष] [प्र]कार के परिवेश का निर्माण करना भी हो स[कता है] । महात्मा बुद्ध, आम्रपाली, सिंह सेनापति त[था अ]जातशत्रु के आस-पास हिन्दी साहित्य की [अने]क महत्वपूर्ण कृतियों ने जन्म लिया, उ[न] की असहजता देखी गई और गणतं[त्र] निर्माण और उसके स्वरूप की चर्चा

Appointments

गई।

रांगेय राघव के ऐतिहासिक उपन्यासों की
एक लम्बी सूची है जिनकी प्रामाणिकता नहीं मिलती।
अतः उन प्रागैतिहासिक काल पर जाता है।
'मुर्दों का टीला' में उन्होंने उस युग का
काल्पनिक चित्र प्रस्तुत किया है और कथन
अनुमान से एक संस्कृति के विलुप्त हो जाने के
कारण बताया है।

'हजारी प्रसाद द्विवेदी' के सारे उपन्यास ऐतिहासिक
पौराणिक उपन्यास के श्रेणी में आते हैं। उनका परिवेश
तथा अद्भुत है। वे प्रामाणिक भी हैं और आकर्षक
। किन्तु ~~आ~~ 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की नायिका
...णी ऐतिहासिक चरित्र नहीं है, किन्तु यह
...न्यास ऐतिहासिक न होकर ऐतिहासिक रोमांच हो
है। 'चारु चन्द्र लेख' तथा 'पुनर्नवा' प्राचीन
...हासिक साहित्यिक कृतियों तथा लोककथाओं पर
~~[illegible]~~ आधृत हैं।

अमृतलाल नागर ने अनेक ऐतिहासिक

उपन्यास लिखा और उन सबका अपना महत्व है। 'मानस का हंस' तथा 'खंजन नयन' हिन्दी के दो महान कवि को नायक बनाकर लिखे गये उपन्यास हैं। यद्यपि 'खंजन नयन' के महत्व से मुझे कोई इंकार नहीं है किन्तु अपनी जटिलताओं के कारण व 'मानस के हंस' के समान न तो चर्चित हुआ और न ही लोकप्रिय है। 'मानस का हंस' अनेक रूपों में विलक्षण उपन्यास है। नायक तुलसीदास के समय की दृष्टि से यह ऐतिहासिक उपन्यास है। उनके जीवन चिंतन, साधना, तपस्या, लक्ष्य और उपलब्धियों की दृष्टि से वह ऐतिहासिक उपन्यास है। किशोर होते तुलसी देख लेते हैं कि संसार में कितनी हिंसा है, कितना स्वार्थ है, मूरख है, नंगई है। अन्न के लिए स्त्री-पुरुष का शरीर मंडी में बिकता है। सत्ता अत्याचारी धन करुणाहीन है, ईश्वर द्वेष में लिप्त है। प्रत्येक भक्त के समान तुलसी भी अपने ईश्वर से पूछते हैं कि अगर सृष्टि उन्हीं की है, तो यह संसार इतना नारकीय क्यों है?

Appointments

8.00 वस्तुतः अपने इतिहास के उज्ज्वल स्वर्ण की पूजा है। तुलसी की पूजा, अपनी संस्कृति की ही पूजा है। तुलसी
9.00 की पूजा, अपनी संस्कृति भारतीय संस्कृति का आदर्श
ने मानस में समग्र भारतीय संस्कृति को कथानायक
10.00 प्रस्तुत किया है और तुलसी को कथानायक
11.00 बनाकर 'अमृतलाल नागर' ने विदेशी आक्रमण
12.00 की क्रूरता और विदेशी शासन की कठोरता के मध्य
भी अपनी संस्कृति को अपने जीवन में उतारने
3.00 और उसकी रक्षा के लिए अपने को समर्पित कि

'तोड़ो कारा तोड़ो' स्वामी विवेकान

के संबंध में 'नरेन्द्र कोहली' का प्रसिद्ध उपन्यास पहला खण्ड 1992 ई० में प्रकाशित हुआ था, दू साधना 1993 में तीसरा परिव्राजक 2003 में चौथा 2004 ई० में। 'तोड़ो कारा तोड़ो' इसमें नायक राजकुमार के समान पला है और कल विश्वविद्यालय में अध्ययन किया है। वह अप ता के मित्रों के कारण दरिद्र हो जाता है। भू -, फटे कपड़े, नंगे पाँव चलते हुए चक्कर खा गिर पड़ता है। ऐसे में उसे दिव्य

अनुभूति होती है। अहयात्म इस यथार्थ समाज में ऐसा प्रवेश करता है कि उस सुदर्शन युवक का, जिसे देखकर अमरीकी युवतियाँ पागल हो गई थीं, विवाह नहीं हो पाया। इनके विषय में 'डॉ० हेनरी फॉन राइट' ने लिखा था, उनकी विद्वता अमेरीका के सारे विद्वान, प्रोफेसरों की सामूहिक विद्वता से भी अधिक थी। वह स्वयं स्वीकार कर कि उसका जन्म विवाह संस्कार के लिए नहीं ...कि वह एक लक्ष्य लेकर इस संसार में आए

ऐतिहासिक उपन्यासों की सार्थकता ... देश और काल के सुन्दर आकर्षण चित्र ... में नहीं है। वह अपने युग को असीम ... काल के साथ जोड़ता है और उ... एक निश्चित प्रतिपाद्य भी होता है

हमारा ऐतिहासिक उपन्यास एक ... यात्रा तय कर आया है और कुछ ... पर पहुँच रहा है जो हमारे सम...

नहीं है। वह उनका
के लिए सिद्धान्त मात्र नहीं है। वह उनका एवं समग्र जीवन
दैनन्दिन जीवन है। वह उनका इहलौकिकता का वर्णन
दर्शन के स्तर है जो केवल इहलौकिकता का उपन्यास नहीं दे
करने वाले सामाजिक - सांसारिक उपन्यास नहीं दे
सकता। 'स्वामी विवेकानन्द' ने कहा था कि
देश को अपनी स्वतंत्रता के लिए राजनीति
दलदल में फँसने की आवश्यकता नहीं है
हम अपना सात्विक चरित्र प्राप्त कर
तो हमारी समस्याओं का समाधान आ
आप हो जायेगा। अतः ऐतिहासिक
ने अपने अपने ढंग से उसी समृद्धि
कर बाद के दिनों में आनेवाले उप
का मार्गदर्शन किया।